

मंत्र और अध्यात्म चेतना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय दर्शन में अध्यात्म चिंतन को बहुत अधिक महत्व प्रदान किया गया है। भारतीय दर्शन आत्मवादी दर्शन कहलाता है। अध्यात्म की समूची योजना, समूची परिकल्पना और व्यवस्था इस आधार पर टिकी है कि आत्मा को कर्म से मुक्त करना है। आत्मा और मुक्त आत्मा दोनों के बीच कर्म का एक सूत्र है जो समूचा विस्तार करता है। यहां आत्मा को शुद्ध, बुद्ध, निष्कलमष माना गया है। सर्वावभासक वही है। ज्ञानेन्द्रियां भी उसी के प्रकाश से प्रकाशित होकर विषय का प्रकाश करती हैं। इसलिये कहा गया है कि 'वह श्रोत का श्रोत है, मन का भी मन है, प्राण का भी प्राण है, वह वाणी की भी वाणी है। उसका वर्णन वाणी के द्वारा नहीं किया जा सकता उसी की शक्ति से वाणी बोली जाती है।

विकास तो प्राकृत वस्तुओं का होता है। आत्मा प्राकृत प्रपञ्चातीत है। इसलिये उसके विकास का कोई प्रश्न ही नहीं है। औपनिषदिक परम्परा में जो कुछ विकृति होती है वह बुद्धिगत होती है। बुद्धि ही प्रकृति का प्रथम विकार है। इसलिए उसी की शुद्धि के लिये प्रयास किया जाता है। गायत्री मन्त्र में भी कहा गया है कि 'धियो यो नः प्रचोदयात्' तथा 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' इस प्रकार वैदिक वाक्यों के द्वारा मन और बुद्धि के परिष्कार की बात स्वीकृत है। इसी बात को केनोपनिषद् में इस प्रकार कहा गया है— उस सच्चिदानन्द परब्रह्म को प्राकृत अन्तःकरण और इन्द्रियां नहीं जान सकती। वे वहां तक पहुंच ही नहीं पाती। उस अलौकिक दिव्य तत्त्व में इनका प्रवेश नहीं हो सकता। इनमें जो चेतना और क्रिया की प्रतीति होती है वह उसी तत्त्व की शक्ति से होती है। जहां तक विकास का प्रश्न है वह सांसारिक वस्तुओं में होता है। ह्रास और विकास का क्षेत्र जगत् ही है। आत्मा इससे पृथक् एक रूप, एक रस, शाश्वत, अखण्ड और प्रपञ्चातीत है। इसीलिए आत्मा के लिए कहा गया है कि 'रसो वै सः अर्थात् वह आनन्दस्वरूप है। उसमें किसी भी प्रकार का विकास, ह्रास नहीं होता।

संवर और निर्जरा दोनों मोक्ष के मार्ग है और उनका पथ है—तप। तप का प्रधान अंग है—ध्यान। मन्त्र जप ध्यान की प्रथम भूमिका है तथा मन्त्र की आराधना से अंतराय कर्म नष्ट होते हैं। नमस्कार महामंत्र के पांच पद साधना के आलम्बन हैं—

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंचणमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

अध्यात्म साधना का सारा विकास शरीर और चैतन्य दोनों भिन्न है इसी विचारधारा के आधार पर हुआ है। निश्चय नय की दृष्टि से नमस्कार महामंत्र और अध्यात्म, नमस्कार महामंत्र और आत्मा को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। अर्हता, सिद्धि, आचार, ज्ञान और साधना जीवन के ये पांच आयाम हैं। इन पांचों आयामों का विकास करके नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को जिवन्त रखा जा सकता है। नमस्कार महामंत्र वितराग महामंत्र है। यह जन्म तन्मान्तरों के संस्कारों को शिथिल कर देता है। नमस्कार महामंत्र, संकल्प शक्ति, चित्त की निर्मलता, जागरूकता और पवित्रता देने वाला मंत्र है। एकाग्रता के विकास के लिये 'अ सि आ उ सा' मंत्र जो नमस्कार महामंत्र का आदि वर्ण है अत्यन्त प्रभावशाली मंत्र है। एकाग्रता की सिद्धि एवं विघ्ननिवारण हेतु 'अ' का अभ्यास नाभि पर, 'सि' का मष्तिष्क पर, 'आ' का कण्ठ पर, 'उ' का हृदय पर और 'सा' का उच्चारण मुख पर ध्यान लगाते हुये करना चाहिये। इसी प्रकार संकल्प शक्ति के विकास करने के लिये 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' का जाप दर्शन केन्द्र पर दीर्घ स्वास के साथ आधे घण्टे तक करना चाहियें।

‘अ सि आ उ सा’ मंत्र का निर्माण भगवान श्री पार्श्वनाथ के द्वारा हुआ था। कमठ तपस्वी की धुनी में जब नाग—नागिन जल रहे थे तब भगवान पार्श्वनाथ ने ‘अ सि आ उ सा’ मंत्र सुना कर ही उनका उद्धार किया था। इस मंत्र के प्रभाव से ही दोनों ही नाग—नागिन नागकुमार देवताओं के अधिपति इन्द्र और इन्द्राणी बने थे। भगवान् पार्श्वनाथ के मुख से कहा हुआ होने के कारण यह मंत्र प्रभावशाली माना जाता है। यह अनेक सिद्धियों के देने वाला है। यह सर्वसिद्धि मंत्र नित्य सूर्योदय के समय सूर्याभिमुख होकर 108 बार जपने से गृहकलह का समन, शान्ति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। ‘**ऊँ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा अनाहत विजये अर्ह नमः**’ इस मंत्र को सवा लाख सिद्ध कर दिपावली के दिन जपने से साधक को जीवन पर्यन्त सर्प का भय नहीं रहता है।